P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* (Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

हिन्दी फिल्म संगीत व भारतीय वाद्य

सारांश

हिन्दी फिल्म जगत भारतीय संस्कृति का दर्पण है। फिल्म जगत को प्रभावशाली बनाने के लिए भारतीय संगीत की अहम भूमिका रही है। भारतीय संगीत फिल्म जगत का अटूट अंग है। संगीत के बिना फिल्मों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। फिल्म का प्रत्येक दृश्य संगीत के बिना निर्जीव सा लगता है। फिल्म संगीत की लोक प्रियता में भारतीय वाद्यों की अहम भूमिका रही है। फिल्म संगीत के आरम्भिक समय से लेकर आज तक भारतीय वाद्यों चाहे वो स्वर वाद्य हों चाहे ताल वाद्य के प्रयोग ने फिल्मों में अत्यधिक आकर्षण उत्पन्न किया है और जनसाधारन को प्रभावित किया है। निःसन्देह फिल्म संगीत में शास्त्रीय वाद्य, लोक वाद्य और पश्चिमी वाद्य का प्रयोग होता है, लेकिन जिन गीतों में भारतीय वाद्यों का प्रयोग मिलता है वो गीत अन्तर मन को छू जाते हैं और लंबे समय तक याद रहते हैं।

मुख्य शब्द : फिल्म जगत, फिल्म संगीत, भारतीय वाद्य।

वनिता
सहायक प्राध्यापक,
संगीत विभाग,
पंजाबी विश्वविद्यालय,
पटियाला, पंजाब, भारत

प्रस्तावना

भारतीय फिल्में सबसे ज्यादा संगीत के बलबूते पर ही चलती हैं क्योंकि फिल्म संगीत ने भारतीय संगीत की लगभग समस्त शैलियों और विधाओं को अपनाया है। फिल्मों की लोकप्रियता बहुत हद तक फिल्मी संगीत पर टिकी हुइ होती हैं। फिल्म संगीत में पाश्व–गायन परम्परा के आगमन के साथ पार्श्व वाद्यों की गिनती में भी बढोत्री हुई और नवीन वाद्य प्रचार में आए। आरम्भिक समय में पार्श्व संगीत में तबला, हरमोनियम और वायलिन वाद्यों का ही प्रयोग होता था। लेकिन धीरे–धीरे भारतीय संगीत क्षेत्र के समस्त स्वर और ताल वाद्यों को फिल्म संगीत में सम्मिलित किया गया। शुरु में फिल्म संगीत शास्त्रीय संगीत पर आधारित था जिसके लिए भारतीय वाद्यों का प्रयोग स्वभाविक था। वाद्य किसी भी श्रेणी का हो फिल्म संगीत में हर वाद्य ने अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। किसी प्रकार का गीत हो उसको सुन्दर रूप प्रदान करने के लिए भारतीय वाद्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। फिल्म संगीत में वादक कलाकारों ने भी सराहनीय कार्य किया है। उनकी ऊँगलियों ने ऐसा जादू बिखेरा कि जैसे वाद्य खुद–ब–खुद बोल रहा हो। भारतीय वाद्यों के प्रयोग ने ना केवल हिन्दी फिल्म संगीत में शास्त्रीयता को कायम रखा हुआ है बल्कि सुगम संगीत, सूफी संगीत और लोक संगीत पर आधारित फिल्मी गीतों को भी संवारा और सजाया है।

साहित्यावलोकन

हिन्दी फिल्म जगत मनोरंजन और ज्ञान का वो अनमोल खज़ाना है, जिस की ओर हर वर्ग का व्यक्ति आकर्षित होता है। हिन्दी फिल्म जगत का आज जो विशाल रूप हमारे सामने है इसका इतिहास बहुत ही रोचक और अदभुत रहा है।

हिन्दी फिल्मों का आगमन 20वीं शताब्दी में हुआ जो कि नाटकों का विकसित रूप है। फिल्में विभिन्न कलाओं के सुमेल का मनोरंजक और सुलभ माध्यम हैं। फिल्में समाज का दर्पण हैं और समाज भी फिल्मों से प्रेरित होता आया है। फिल्म जगत जनजोवन का ऐसा हिस्सा बन चुका है जो कि समाज से कभी भी अलग नहीं किया जा सकता। फिल्म निर्माण एक सामूहिक क्रिया है, जिसमें विभिन्न व्यक्तियों का सहयोग रहता है, जैसे कि फिल्म निर्माता, निर्देशक, पटकथा और संवाद लेखक, नायक–नायिका, गीतकार, संगीत निर्देशक, पार्श्व गायक–गायिका, वादक कलाकार और रिकार्डिस्ट इत्यादि।

भारतीय संगीत में विभिन्न धाराएँ प्रचार में है : जैसे कि लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत, उप–शास्त्रीय संगीत, भक्ति संगीत और सुगम संगीत इत्यादि। इन धाराओं में एक और प्रभावशाली धारा ''फिल्म संगीत'' भी शामिल हुई। फिल्म संगीत धारा ने भारतीय संगीत के विकास में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तकनीकी विकास के तहत प्रवाहित हुई ''फिल्म संगीत'' धारा ने बहुत ही कम समय में अपनी एक विशिष्ट पहचान बना ली है। जहाँ हिन्दी फिल्मों को

लोकप्रियता में भारतीय संगीत की सभी धाराओं ने योगदान दिया है वहीं भारतीय संगीत के विकास में भी हिन्दी फिल्म संगीत ने सराहनीय कार्य किया है। संगीत का मुख्य उद्देश्य आनन्द देना है और इस उद्देश्य को फिल्म संगीत ने धारण किया है।

फिल्म जगत के इतिहास पर नज़र डाले तो इसके दो युग मिलते हैं :

1. पहला मूक फिल्मों का युग (1913 ई. से 1930 ई. तक)
2. दुसरा स्वाक फिल्मों का युग (1931 ई. से वर्तमान समय तक)

दादा साहिब फालके जिनको हिन्दी फिल्म जगत का जन्मदाता कहा जाता है, ने पहली मूक फिल्म ''राजा हरीशचन्द्र'' का निर्माण किया, जो कि भारत में 21 अप्रैल 1913 को प्रदर्शित हुई। ''फिल्मों के क्षेत्र में बड़ा परिवर्तन और उपलब्धि 14 मार्च 1931 को हुई, जब भारत की पहली स्वाक (बोलती) फिल्म ''आलम आरा'' आई।''[1]

फिल्म ''आलम आरा'' के साथ स्वाक फिल्मों का दौर शुरू हुआ। जिसमें संवाद के साथ–साथ गीत–संगीत का भी आगमन हुआ। ''आलम आरा'' फिल्म में संवाद कम और गीत संगीत अधिक था। इस में कई सारे गीत थे और गीत संगीत के माध्यम से कहानी को कहे जाने की या आगे बढ़ाने की परम्परा आरम्भ हुई।

''1932 में बनी फिल्म ''इंद्र सभा'' में 71 गीतों ने फिल्म संगीत में इतिहास रचा है क्योंकि यह आजतक की फिल्मों के मुकाबले सबसे अधिक फिल्म गीतों का रिकार्ड है।''[2]

स्वाक फिल्मों के आगमन से जब फिल्मों में गीत–संगीत का दौर शुरू हुआ तो पार्श्व संगीत में वाद्यों का प्रयोग स्वभाविक ही था, जिससे फिल्मों ने जन साधारण को अपनी ओर आकर्षित किया। ''1934 में नितिन बोस के निर्देशन में बंगाल में ''भाग्यचक्र'' फिल्म बन रही थी जिसका बाद में हिन्दी रूपांतर ''धूपछांव'' के नाम से हुआ। इस फिल्म में नितिन बोस ने शास्त्रीय संगीत की गायिका पी. हीरा लक्ष्मीबाई से गीत गवाया और नायिका बेगम पारा ने इस गीत के बोलों पर अदाकारी की। इस प्रयोग से पार्श्व–गायन परम्परा का आरंभ हुआ।''[3]

आरम्भिक फिल्मों में मुख्य रूप में तबला, हरमोनियम और वायलिन वाद्यों का ही प्रयोग होता था। जैसे ही पार्श्व–गायन परम्परा का आगमन हुआ इसके साथ ही सगीत में अधिक वाद्यों का प्रयोग होना आरम्भ हुआ।

फिल्म संगीत में मुख्य रूप में भारतीय वाद्यों के प्रयोग ने फिल्मों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने में अत्यधिक सहयोग दिया है। भारतीय वाद्यों के प्रयोग से फिल्मी गीत–संगीत में अत्यधिक आकर्षण पैदा हुआ और गीत संगीत जनसाधारण तक पहुँचा।

फिल्म संगीत की लोकप्रियता में भारतीय वाद्यों की अहम भूमिका रही है। वाद्य ध्वनि के पूरक होते हैं जैसे की भारतीय वाद्यों के प्रयोगात्मक विकास के अनेक माध्यम हैं, जिनके द्वारा वाद्यों का विकसित रूप हमारे सामने है। इन माध्यमों म से अत्यधिक प्रभावशाली माध्यम फिल्म जगत प्रमाणित हुआ है। हिन्दी फिल्म संगीत के माध्यम से भारतीय वाद्य अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित और प्रसारित हुए हैं। किसी भी प्रकार का गीत हो उसको सुंदर और मधुर बनाने के लिए भारतीय वाद्यों का महत्वर्पूण योगदान रहा है। फिल्म जगत में जन रूची के अनुसार हर कला को शामिल किया गया है, जिसमें सर्व प्रिय संगीत है और संगीत में सबसे अधिक आर्कषण का केन्द्र बिन्दु भारतीय वाद्य रहे हैं।

इस में कोई संदेह नहीं कि आरंभिक समय से ही फिल्म संगीत का आधार शास्त्रीय संगीत रहा है और फिल्मों का संगीत पुरी तरह से शास्त्रीय संगीत पर आधारित था। फिल्म संगीत लेखक पंकज राग अनुसार ''आरंभिक संगीतकारों के संगीत में राग रागनियों का शुद्ध रूप मिलता है।''[4] शास्त्रीय संगीत पर आधारित धुनों को भारतीय वाद्यों के प्रयोग से और भी सुंदर रूप में पेश किया गया है। गीत–संगीत में शास्त्रीय संगीत की अवतारना में भारतीय वाद्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इस प्रयोग को फिल्म संगीतकारों ने बहुत गहराई से अपनाया है और संगीत में भारतीय वाद्यों का महत्व देखते हुए प्रयोग किया है।

जैसे कि सारंगी, सरोद, संतर सितार, वायलिन, रबाब, बांसुरी, शहनाई, पखावज, मृदंग और तबला। फिल्म संगीत में भारतीय वाद्यों का प्रयोग फिल्म संगीत की मधुरता और वाद्यों के प्रचार–प्रसार में विशेष भूमिका निभाता रहा है। जिन गीतों में इन वाद्यों का प्रयोग मिलता है उन गीतों ने जन साधारण को हमेशा आकर्षित किया है।

फिल्मों के आरम्भिक समय में फिल्म की कहानी का विषय पौराणिक रहा है, जिसके गीत–संगीत का आधार भी परम्परागत अथवा शास्त्रीय संगीत रहा है। उस समय पार्श्व संगीत के लिए भारतीय वाद्यों का प्रयोग उपयुक्त माना गया है। संगीत कला के आधार पर भी अनेक फिल्मों का निर्माण हुआ जिसमें से ज्यादा फिल्में शास्त्रीय संगीत, संगीतकारों और वाद्यों पर आधारित हैं: जैसे कि तानसेन, बैजुबावरा, बसन्त बहार, झनक–झनक पायल बाजे, शबाब, नवरंग, किनारा, सुरसंगम, उमराउ जान, संगीत, साज़, सरदारी बेगम इत्यादि, जो कि शास्त्रीय संगीत पर आधारित हैं और इनके गीत–संगीत में भारतीय वाद्यों का भरपूर प्रयोग मिलता है।

कई इतिहासिक फिल्में जैसे कि: मुगल–ए–आज़म, जहां आरा, रानी रूपमती, ताजमहल, अमरावती, रज़ीया सुल्तान आदि ने शास्त्रीय वाद्यों का भरपूर प्रयोग मिलता है।

शास्त्रीय वाद्यों का प्रयोग करने वाले संगीत निर्देशक भी भारतीय संगीत के घरानों से सम्बन्धित रहे हैं। इस तथ्य की पुष्टि डॉ. मुकेश गर्ग करते हैं: ''संगीतकार के रूप में जो लोग हिन्दी फिल्मों में आए उन में से अधिकतर शास्त्रीय संगीत के ना केवल जानकार थे बल्कि घरानेदार भी थे।''[5]

इसी कारण आरम्भिक दौर का हिन्दी फिल्म संगीत शास्त्रीय रंग में रंगा हुआ था। इस तथ्य को उजागर करते हुए सत्यवती शर्मा लिखते हैं:

''फिल्मों में आरम्भ से ही शास्त्रीय संगीतकार ही फिल्म संगीत की रचना करते थे और हर फिल्म संगीतकार किसी न किसी संगीतिक घराने का शिष्य हुआ करता था। यही कलाकार संगीत को विज्ञानिक दृष्टि से समझकर फिल्मों में संगीत दे सकते थे और यही विद्ववान समाज में संगीतशाला के रूप में पहचाने जाते थे।''[6]

सभी फिल्म संगीतकार संगीत की गहरी सूझ–बूझ के मालिक थे, जिन्होंने अपने संगीत में भारतीय वाद्यों के वाद्यवृन्द का स्वरुप बहुत ही विशाल और विस्तृत रूप में पेश किया है। जिन गीत–संगीत में भारतीय वाद्यों का प्रयोग मिलता है, उन गीतों में शास्त्रीय संगीत के श्रोताओं के इलावा जनसाधारण को भी आकर्षित किया है।

समय के परिवर्तन और तकनीकी विकास के चलते फिल्म संगीत का लगभग हर दशक में नवीन रूप उजागर हुआ है। जैसे–जैसे तकनीक विकास करती गई, लोक रूची अनुसार फिल्म संगीत में भी नवीन प्रयोग होते गए और नवीन संभावनाएं पैदा हुई। पार्श्व संगीत में भारतीय वाद्यों के साथ पश्चिमी वाद्यों का भी मिश्रण हुआ। संगीत निर्देशक सी. राए. चन्द्र बोराल ने फिल्म ''पूरन भगत'' में पश्चिमी वाद्यों का भरपूर प्रयोग किया, जिससे पश्चिमी वाद्यों के प्रति आकर्षण बढ़ गया। ''स्वतन्त्रता के बाद गोआ के पश्चिमी संगीत के करिश्चन वादक कलाकारों को, होटलों, आरकैस्ट्रा और ब्रिटिश सहायता प्राप्त संस्थानों से बाहर होना पड़ा। नवीनता की खोज में प्रयत्नशील फिल्म संगीतकारों ने उनको काम दिया और जल्दी ही विशिष्ट धुनें बनी, जिनमें पश्चिमी वाद्यों से बजाए पीस वरक छा गए।''[7]

गीत संगीत में विदेशी धुनों और प्रदेशिक लोक संगीत का रंग दिखाई देने लगा, जिसमें पश्चिमी वाद्यों का और लोक वाद्यों का बोलबाला हो रहा था। फिल्म संगीत में इस बढ़े परिवर्तन से भी भारतीय वाद्यों के महत्व को अनदेखा नहीं किया गया बल्कि पश्चिमी वाद्यों और लोक वाद्यों के प्रयोग के साथ भारतीय वाद्यों का प्रयोग एक विशिष्ट रंग में उभर कर आया। जिन भी फिल्मी गीतों में भारतीय वाद्यों का प्रयोग मिलता है वो गीत कितने भी पुराने हों, पर आज भी दिल को छू लेते हैं, जिसका कारण भारतीय वाद्यों की मौलिकता है। किसी भी तरह की धुन हो, चाहे वो शास्त्रीय संगीत पर आधारित हो चाह पश्चिमी धुन पर आधारित हो, शास्त्रीय वाद्यों के प्रयोग ने उसे और भी सुंदर, मधुर और आकर्षक रूप प्रदान किया है।

कुछ लोकप्रिय फिल्मी गीतों की सूची जिनमें भारतीय वाद्यों का सुन्दर प्रयोग मिलता है :

1. फिल्म ''सीमा'' (1955) का गीत ''मन मोहना बड़े झूठे'' जिसमें विशेष रूप में सारंगी का बहुत सुन्दर प्रयोग मिलता है।
2. फिल्म ''परख'' (1960) का गीत ''ओ सजना बरखा बहार आई'' जिसमें विषेश रूप में सितार का बहुत सुन्दर प्रयोग मिलता है।
3. फिल्म ''चित्रलेखा'' (1964) का गीत ''मन रे तु काहे ना धीर धरे'' में जिसमें विशेष रूप में सरोद का बहुत सुन्दर प्रयोग मिलता है।
4. फिल्म ''गुड्डी'' (1972) का गीत ''बोले रे पपीहरा'' में जिसमें विशेष रूप में सितार और सरोद का बहुत सुन्दर सुमेल मिलता है।
5. फिल्म ''आप की कसम'' (1974) का गीत ''चोरी चोरी चुपके चुपके'' में सितार का विशेष रूप म प्रयोग बहुत प्रभावशाली लगता है।

इस तरह के अनेक गीत हैं, जिनको भारतीय स्वर वाद्यों के साथ–साथ ताल वाद्यों ने भी सुन्दर रूप प्रदान किया है और इतने सालों के बाद आज भी आनन्द देते हैं। जब पश्चिमी वाद्यों का बोलबाला था लोकरूची अनुसार पश्चिमी और लोक वाद्यों का प्रयोग होता था इन वाद्यों की भीड़ में भारतीय वाद्यों का प्रयोग अनमोल रत्नों की तरह चमकता रहा।

1970 के दशक के बाद भारतीय वाद्यों के प्रयोग में कमी आनी शुरु हुई। फिल्म जगत में पश्चिमीकरन बढ़ गया जिसका प्रभाव फिल्म संगीत पर भी पड़ रहा था, जिस कारण भावपूर्ण संगीत भावहीन संगीत के रूप में परिवर्तित होना शुरू हो गया।

1980 के दशक में और इसके बाद के समय में बनी फिल्मों में कुछ गिनी–चुनी फिल्में ही मिलती हैं, जिनमें भारतीय वाद्यों का प्रयोग मिलता है जैसे की फिल्म ''चश्मेबददूर'' (1981) के गीत ''कहां से आए बदरा'', फिल्म ''उमराव जान'' (1981) का गीत ''दिल चीज़ क्या है'', फिल्म लेकिन (1990), का गीत ''झूठे नैना बोले सांची बतियां'' आदि में भारतीय वाद्यों का बहुत ही सुन्दर प्रयोग मिलता है जिस कारण ये गीत सदा बहार गीतों के रूप में आज भी हर कोई गुनगुनाता है।

21वीं सदी में ऐसे गीतों की भरमार है जिसमें पश्चिमी वाद्यों का बोलबाला है जिससे पैर तो धिरकते हैं पर दिल पर असर नहीं करते। इस स्थिति में भी कुछ संवेदनशील संगीतकारों ने भारतीय वाद्यों के महत्व को समझते हुए अपने गीतों में भारतीय वाद्यों का प्रयोग करके उनको सदाबहार नगमे बनाने का प्रयास किया है और आगे भी कर रहे हैं जैसे कि : फिल्म ''देवदास'' (2002) के सभी गीत, फिल्म भूल–भुलईयां (2007) का गीत ''मेरे ढोलना सुन'', फिल्म बाजीराव मस्तानी (2015) के सभी गीत।

आज के मशीनीकरण युग में सिन्थेसाइज़र का सामराज्य कायम हो चुका है। सिरजानात्मकता के स्थान पर संगीत निर्माण की प्रक्रिया हावी हो गई है। ऐसी स्थिति में जब परम्परागत वाद्यों की आवश्यकता होती है तो उन धुनों को सिन्थेसाइज़र द्वारा प्राप्त कर लिया जाता है। इससे एक बात तो स्पष्ट है कि भारतीय वाद्यों के ध्वनी की आवश्यकता हमेशा रही है पर उसको सिन्थेसाइज़र द्वारा प्राप्त करने की क्रिया ने भारतीय वाद्यों की मौलिकता को नष्ट किया है। सिन्थेसाइज़र द्वारा प्राप्त वाद्यों की ध्वनि और भारतीय वाद्यों की असल ध्वनि ने स्पष्ट अन्तर दिखाई देता है।

निष्कर्ष

हिन्दी फिल्म जगत के सौ साल पूरे हो चुके हैं। मानव जीवन के हर पहलु से जुड़े फिल्म संगीत के आकर्षण से पूरा विश्व प्रभावित है। जिन गीत संगीत में भारतीय वाद्यों का प्रयोग होता है वो अपनी विशेष छाप छोड़ते हैं और उच्च स्तर पर लोकप्रियता पाप्त करते हैं। फिल्म संगीत को उत्तम स्थिति प्रदान करने के लिए भारतीय वाद्यों ने जादुयी भूमिका निभाई है।

अंत टिप्पणी

1 *लावण्य कीति सिंह, ''काव्य'' हिन्दी चलचित्र जगत के सफलतम संगीतकार भाग–1 लक्ष्मीकांत प्यारेलाल, पृष्ठ – 8.*
2 *पंकज राग, धुनों की यात्रा, पृष्ठ –15.*
3 *डॉ. उमा गर्ग, संगीत का सौन्दर्य बोध, पृष्ठ – 6.*
4 *पंकज राग, धुनों की यात्रा, पृष्ठ – 12.*
5 *डॉ. मुकेश गर्ग, समाज के साथ उठता गिरता फिल्म संगीत, संगीत, अंक जनवरी/फरवरी 1998, पृष्ठ–4.*
6 *डॉ. सत्यवती शर्मा, संगीत का समाज शास्त्र, पृष्ठ – 147.*
7 *डॉ. स्वाती पाठक, भारतीय फिल्म संगीत में आरकैस्ट्रा का प्रभाव, मधुरानी शुक्ला, भारतीय सिनेमा की विकास यात्रा, भाग–2, पृष्ठ – 552.*